गणतंत्र दिवस समारोह में माननीय कुलपति - आचार्य राज कुमार मित्तल जी का संबोधन
(26 जनवरी, 2026)

गणतंत्र दिवस के इस पावन अवसर पर, मंच पर विराजमान आज के **मुख्य अतिथि मेजर जनरल मनोज तिवारी जी**, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अश्वनी सिंह जी; सभी प्राध्यापक साथी; हमारे बीच उपस्थित विश्वविद्यालय के भूतपूर्व छात्र, जो अपने-अपने क्षेत्रों में विशिष्ट और उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं; गैर-शिक्षण कर्मचारीगण; यहां उपस्थित समस्त अतिथिगण, सुरक्षा कर्मी, हमारे तेजस्वी और उत्साही प्रिय छात्र- छात्राओं छायाकार एवं पत्रकार साथियों आप सभी को 77वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

साथियों, हम सभी जानते हैं कि आज सम्पूर्ण भारतवर्ष में 77वाँ गणतंत्र दिवस बड़े हर्ष और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि उसी भावना और उल्लास के साथ बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय में भी इस पावन पर्व का अत्यंत सुंदर और गरिमामय आयोजन हो रहा है। इसके लिए आप सभी निश्चय ही हार्दिक बधाई के पात्र हैं।

साथियों, इस अवसर पर मैं उन सभी वीर शहीदों को सादर नमन करता हूँ, जिनके त्याग और बलिदान के परिणामस्वरूप हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई और हम एक सुदृढ़ गणतंत्र के रूप में स्थापित हो सके। साथ ही, मैं बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी को भी विनम्र नमन करता हूँ, जिन्होंने सामाजिक भेदभाव, बिखराव, जाति-प्रथा और धार्मिक जटिलताओं जैसी असंख्य चुनौतियों के बीच अद्भुत दूरदर्शिता का परिचय देते हुए हमें एक ऐसा संविधान प्रदान किया, जिसने सशक्त सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास की मजबूत आधारशिला रखी।

आज पूरा विश्व भारत की ओर आशा और विश्वास की दृष्टि से देख रहा है। आर्थिक परिप्रेक्ष्य में विचार करें, तो भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा चुका है, जो हमारी सामूहिक शक्ति, संकल्प और परिश्रम का प्रमाण है।

इंग्लैंड, जो कभी हमारे देश पर शासन करता था, आज अनेक मानकों पर हमसे पीछे छूट चुका है। सामाजिक दृष्टि से देखें या विकास के अन्य किसी भी पैमाने पर विचार करें, तो यह स्पष्ट है कि भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। विशेष रूप से कृषि के क्षेत्र में, जहाँ कभी हमें विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता था, आज हम आत्मनिर्भर ही नहीं, बल्कि समृद्ध स्थिति में हैं।

आज देश के पास लगभग 350 मिलियन टन खाद्यान्न का भंडार है, और भारत सरकार अत्यंत प्रभावी ढंग से 80 करोड़ से अधिक लोगों को निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध करा रही है। इतना ही नहीं, हम दालों, सब्ज़ियों, फलों, दुग्ध उत्पादों और अन्य खाद्य पदार्थों का बड़े पैमाने पर निर्यात भी कर रहे हैं।

यह समस्त उपलब्धियाँ खेतों में परिश्रम करने वाले हमारे अन्नदाताओं और अनुसंधान में जुटे वैज्ञानिकों की अथक मेहनत का परिणाम हैं। इस गौरवपूर्ण अवसर पर मैं उन सभी किसानों और वैज्ञानिकों को सादर नमन करता हूँ, जिनके परिश्रम से देश खाद्य-सुरक्षा से खाद्य-समृद्धि की ओर अग्रसर हुआ है। यह सब खेती में लगे किसानों और वैज्ञानिकों की मेहनत का फल है। उनको भी मैं नमन करता हूं। आज हम वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो पूरा विश्व का एक भरोसा हमारे

ऊपर जगा है । हम सब जानते हैं चंद्रयान मंगल ग्रह की सफलता और हम उपग्रह भेजने में इसरो एक वर्ल्ड क्लास इंस्टिट्यूशन के रूप में खड़ा हुआ है। थोड़ी सी लागत पर हम कितने उपग्रह ऊपर भेज रहे हैं। कोविड के टाइम में हमने देखा 200 मिलियन के करीब जो वैक्सीन थी, उनको हमने बहुत सारे देशों में मुफ्त में डिलीवर किया। यह भी एक हमारी वैज्ञानिक क्षमता का शानदार प्रतीक है । आज औद्योगिक क्षेत्र को देखें तो मेक इन इंडिया, स्टार्टअप और किसी भी क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर आज ये सब वर्ल्ड क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर है। एक समय था जब छोटी से छोटी चीज, एक सुई से लेकर हवाई जहाज तक सब इम्पोर्ट होता था । आज हम एक डायवर्सिफाइड इंडस्ट्रियल स्ट्रक्चर हैं । हम छोटी से लेकर बड़ी बड़ी चीज को निर्यात कर रहे हैं चाहे वो स्मार्टफोन हो, चाहे अपना जो डिफेंस है उसमें मिसाइल हो, तोपें हों, बारूद हो या कुछ और डिफेंस का सामान, सब में भारत तेज गति से बढ़ रहा है। इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में यदि हम देखें, तो देश के किसी भी राज्य में चले जाइए सबसे पहला परिवर्तन सड़कों की गुणवत्ता में स्पष्ट दिखाई देता है। आज सड़कें कहीं अधिक सुरक्षित, सुगम और समतल हो गई हैं । जो दूरी पहले कई दिनों में तय होती थी, वह अब कुछ ही घंटों में पूरी हो जाती है।

इसी तरह, हवाई अड्डों पर नज़र डालिए, वहाँ बढ़ती हुई भीड़ स्वयं इस बात का प्रमाण है कि हवाई यात्रा अब केवल कुछ लोगों तक सीमित नहीं रही, बल्कि आम नागरिक की पहुँच में आ चुकी है । यह परिवर्तन देश के समग्र विकास और बढ़ती गतिशीलता का सशक्त संकेत है ।

ऐसे आधुनिक और सुव्यवस्थित हवाई अड्डे संभवतः विश्व के बहुत कम देशों में देखने को मिलते हैं। यह उपलब्धि भारत सरकारों, वैज्ञानिकों, अभियंताओं और कर्मचारियों के दृढ़ संकल्प, अनुशासन और अथक परिश्रम का प्रतिफल है। भारत की मेधा और उपलब्धियों के कारण आज यूरोपीय संघ भारत के साथ व्यापार समझौते करने के लिए उत्सुक है।

जी–20 जैसे वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका सम्मानजनक और प्रभावशाली रही है। क्वाड हो या शंघाई सहयोग संगठन, हर प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की उपस्थिति सशक्त रूप से दर्ज हो रही है। सौर ऊर्जा, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी भारत वैश्विक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ रहा है। आज पूरा विश्व इस प्रश्न पर चिंतन कर रहा है कि इस भूमंडल का भविष्य क्या होगा, और यदि कहीं से आशा की कोई ठोस किरण दिखाई देती है, तो वह भारत से ही दिखाई देती है।

भारत ने बहुत ही कम समय में रिन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है । आज हमारी कुल स्थापित विद्युत क्षमता का लगभग 42 प्रतिशत हिस्सा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से प्राप्त होता है । ऊर्जा क्षेत्र में यह तेज़ प्रगति केवल तकनीकी सफलता नहीं है, बल्कि यह एक स्पष्ट संदेश भी देती है कि हम पर्यावरण के रक्षक हैं, उसके भक्षक नहीं।

भारत ने यह दिखाया है कि विकास और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो भी हो सकते हैं । साथियों, हम इस धरती पर एक जिम्मेदार नागरिक की तरह रहना चाहते हैं और यही संदेश आजका भारत पूरे विश्व को दे रहा है ।

हम वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के साथ जीने वाले लोग हैं। हम पूरे विश्व को एक मानते हैं। सबको यह विश्वास है कि भारत किसी पर पहले आक्रमण नहीं करेगा, लेकिन जो हम पर आक्रमण करेगा, उसे बख्शा भी नहीं जाएगा। इसी कारण आज एक मजबूत आत्मविश्वास का निर्माण हो रहा है।
भारत दृष्टिकोण पर्यावरण के प्रति एक सकारात्मक दृष्टि रखता है। वह प्राणीमात्र के कल्याण की बात करता है, इस बात पर जोर देता है कि किसी का नुकसान न हो। वह समन्वय की बात करता है, सर्वधर्म समभाव की बात करता है और व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर बल देता है।

आज पूरे विश्व के सामने एक बहुत बड़ी और गंभीर समस्या है। इस भौतिकवाद के युग में हम सबको अनेक सुविधाएँ मिली हैं और आर्थिक विकास भी बहुत तेज़ी से हुआ है। भारत भी लगभग छह–सात प्रतिशत की दर से विश्व की सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है, लेकिन इस भौतिक विकास के बीच सभी के मन में यह प्रश्न उभर रहा है कि क्या यह विकास टिकाऊ है, क्या यह वास्तव में सतत विकास है। यदि विकास के साथ नैतिकता कमज़ोर होगी, तो क्या सतत विकास संभव हो पाएगा ?

यदि हम पूरे विश्व के मानचित्र पर दृष्टि डालें, तो चारों ओर लड़ाई, अशांति, तनाव, टकराव और विध्वंस ही दिखाई देता है। ऐसे वातावरण में यदि पूरा विश्व किसी एक देश की ओर आशा और भरोसे से देखता है, तो वह भारत है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसकी संस्कृति, इसका स्वरूप, इसका चिंतन और इसके लोग ऐसे हैं, जो सबका भला चाहते हैं। हमारी परंपरा, हमारे भारतीय दर्शन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- इन चारों का संतुलित दृष्टिकोण है।

"धर्मस्य मूलं सुखं, सुखस्य मूलं" अर्थात धर्म का उद्देश्य सुख देना है और सुख, अर्थ के बिना संभव नहीं है। हम चाहते हैं कि व्यक्ति का, समाज का और विश्व का समग्र वैभव बढ़े, संपन्नता आए और वेल्थ क्रिएशन हो लेकिन यह वेल्थ क्रिएशन नैतिकता के आधार पर हो।

आज जो बाज़ार की प्रक्रिया दिखाई देती है, उसमें कट-थ्रोट प्रतिस्पर्धा, शोषण और मुनाफ़ाखोरी जैसी प्रवृत्तियाँ भी देखने को मिलती हैं। इसके विपरीत भारत के संस्कार, हमारी सभ्यता और हमारा ज्ञान इन सबके बीच समन्वय स्थापित करने की बात करते हैं।
यदि हम बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी द्वारा दिए गए संविधान को देखें, तो उसमें भी यही मूल भाव निहित हैं न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व। अर्थात न्याय भी हो, स्वतंत्रता भी हो, समानता भी हो और समाज में बंधुत्व की भावना भी बनी रहे।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है। यहाँ का युवा वर्ग बहुत तेज़ी से स्टार्टअप के माध्यम से नए-नए उद्यम खड़े कर रहा है और यह परिवर्तन हमारे सामने स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। ऐसे में आज आवश्यकता है कि हमारे विश्वविद्यालय इस बदलते परिप्रेक्ष्य में अपनी भूमिका को स्पष्ट और सशक्त रूप से सुनिश्चित करें।

हमें यह देखना होगा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी द्वारा दिए गए समानता, उत्कृष्टता, नवाचार और भाईचारे जैसे सिद्धांतों को एक प्रयोगशाला की तरह अपनाते हुए हम इन्हें समाज तक कैसे पहुँचा सकते हैं।

यदि हम अपने विश्वविद्यालय के संदर्भ में बात करें, तो यहाँ अनेक प्रोफेशनल कोर्सेस के साथ-साथ अन्य पाठ्यक्रम भी संचालित हो रहे हैं। आज के इस परिवर्तनशील समय में हमें यह विचार करना होगा कि हम क्या करें और कैसे करें। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे विद्यार्थियों की कैपेबिलिटी भी बढ़े और उनके भीतर वैल्यूज़ भी विकसित हों।

अर्थात प्रश्न यह है कि हम क्षमता और मूल्य दोनों का एक साथ संरक्षण कैसे करें, और ऐसे कौन से नए मॉडल विकसित कर सकते हैं, जिन्हें समाज को दिया जा सके, ताकि हम 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

एक सशक्त और विकसित भारत के निर्माण की दिशा में हम सभी को अपनी-अपनी भूमिका सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने कहा था कि चाहे संविधान कितना ही अच्छा क्यों न बना दिया जाए, यदि उसे चलाने वाले लोग अच्छे नहीं होंगे, तो वह असफल हो जाएगा।

इसलिए ये संवैधानिक मूल्य और बाबा साहब द्वारा दिए गए सिद्धांत समाज तक पहुँचाना, उन्हें व्यवहार में उतारना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है, इसमें विशेषकर युवा शक्ति की विशेष भूमिका था। युवा शक्ति देश के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा सकती है और निभानी भी चाहिए।

अब प्रश्न यह है कि हम कॉन्स्टिट्यूशनल मोरैलिटी को कैसे समझें और इन सिद्धांतों को धरातल पर कैसे उतारें। मैं सभी विद्यार्थियों से यह अपील करता हूँ कि वे संविधान में निहित मूल्यों को आत्मसात करें, उन्हें व्यवहारिक रूप दें और अपने-अपने स्तर पर यह सोचें कि "मैं क्या कर सकता हूँ" और उसके लिए निरंतर प्रयास करें।

यदि हम ऐसा करेंगे, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम एक सशक्त भारत, एक संवेदनशील भारत और एक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अवश्य सफल होंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं आप सभी को पुनः 77वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई देता हूँ।

जय हिंद, जय भारत।